

मूर्ख बातनी कछुआ

किसी तालाब में कम्बुग्रीव नामक एक कछुआ रहता था। तालाब के किनारे रहने वाले संकट और विकट नामक हंस से उसकी गहरी दोस्ती थी। तालाब के किनारे तीनों हर रोज खूब बातें करते और शाम होने पर अपने-अपने घरों को चल देते। एक वर्ष उस प्रदेश में जरा भी बारिश नहीं हुई। धीरे-धीरे वह तालाब भी सूखने लगा।

अब हंसों को कछुए की चिंता होने लगी। जब उन्होंने अपनी चिंता कछुए से कही तो कछुए ने उन्हें चिंता न करने को कहा। उसने हंसों को एक युक्ति बताई। उसने उनसे कहा कि सबसे पहले किसी पानी से लबालब तालाब की खोज करें फिर एक लकड़ी के टुकड़े से लटकाकर उसे उस तालाब में ले चलें।

उसकी बात सुनकर हंसों ने कहा कि वह तो ठीक है पर उड़ान के दौरान उसे अपना मुंह बंद रखना होगा। कछुए ने उन्हें भरोसा दिलाया कि वह किसी भी हालत में अपना मुंह नहीं खोलेगा। कछुए ने लकड़ी के टुकड़े को अपने दांत से पकड़ा फिर दोनों हंस उसे लेकर उड़ चले। रास्ते में नगर के लोगों ने जब देखा कि एक कछुआ आकाश में उड़ा जा रहा है तो वे आश्चर्य से चिल्लाने लगे।

लोगों को अपनी तरफ चिल्लाते हुए देखकर कछुए से रहा नहीं गया। वह अपना वादा भूल गया। उसने जैसे ही कुछ कहने के लिए अपना मुंह खोला कि आकाश से गिर पड़ा। ऊंचाई बहुत ज्यादा होने के कारण वह चोट झेल नहीं पाया और अपना दम तोड़ दिया।

सीख : बुद्धिमान भी अगर अपनी चंचलता पर काबू नहीं रख पाता है तो परिणाम बुरा होता है।

भाष गडुनी ककुमु

किभी उलाग में कभुगीव नाभक एक ककुमु ररुडा घा उलाग के किनारे ररुने वाले भंकए
एर विकए नाभक रुंभ में उभकी गरुगी ऐभी थी। उलाग के किनारे उीने रुर रेए एगु गडुने
करते एर माभ केने पर मपने-मपने अरे के एल ऐडे। एक वदु उभ प्म में एरा सी गरिम
नकीं करे। पीरे-पीरे वरु उलाग सी भापने लगा।

मग रुंभे के ककुए की गिंडा केने लगी। एग उनेने मपनी गिंडा ककुए में ककीं उे ककुए ने
उने गिंडा न करने के ककु। उभने रुंभे के एक बुक्ति गडुने। उभने उनमें ककु कि भगमें
परुले किभी पानी में लगलग उलाग की पिए करे एर एक लकरी के एकड में
लएका कर उमें उभ उलाग में ले एले।

उभकी गडु भुनकर रुंभे ने ककु कि वरु उे ठीक है पर उरान के एरान उमें मपना भुंरु
गंर रापना केगा। ककुए ने उने रुनेभा एलाया कि वरु किभी सी कालत में मपना भुंरु
नकीं पिलेगा। ककुए ने लकरी के एकड के मपने एंड में पकडा एर ऐने रुंभ उमें लेकर
उरु एले। गडुने में नगर के लेगे ने एग टोपा कि एक ककुमु मुकाम में उरु ए ररुा के उे वे
मुसुद में गिल्लाने लगे।

लेगे के मपनी उरुद गिल्लाने कुर टोपकर ककुए में ररुा नकीं गया। वरु मपना वरु हुल
गया। उभने ऐमें की कुळ करुने के लिए मपना भुंरु पिला कि मुकाम में गिर पडा। उं गारं
गडुने एरु केने के करु वरु गेए एल नकीं पाया एर मपना एभ उेरु एया।

भीप : बुद्धिमान सी मगर मपनी गंठलत पर कडु नकीं राप पाउ के उे परिभ मरुा के उे
के।

मनुवाए - पूरु गडु